





ॐ श्री गणेशाय नमः॥ अथासं तमं द्वाकारं द्वाकारं मलाकुलं॥ एतसर्वं द्वाकारं तमः पश्य काद-  
 रं॥ १॥ रोमकाचार्य उवाच॥ न च ब्रह्मा न च रुद्र न विष्णु न गगनं न द्विनिपाता न चंद्रा कौन्तेयस्यो-  
 नो न हि देवयो न न पट्टे न तिष्ठि न वायुः॥ न भुक्ति न मोक्षे न सागरं न चराओ न हि न न सुखे न  
 भद्रं न प्राप्तिं न नर्म न गद न न गहि न न विपुलं न जयं वा दिव्यं न वायु न च विना न दाम्भरो-  
 ना न विपुलं सत्यं न मेघं न नोयं न न द्रो अमा न वा न न धौ त्वं न गभं न युवती न प्रसदा न वा स्ये-  
 वा स युक्तः॥ विषयने गुरुणा पातयेत् द्वाकारं स्वस्मान् निराकारं निराकारं कश्चिद्वर्णं पश्य मरुति-  
 ये नैव द्वाय नैवे के न मस्य पश्य कादरं॥ १॥ रोमादिभ्यो मद्रा मद्रा विप्रो सर्वं प्राकृतं विष्णोः द-  
 नस्य पुत्रो मद्रा नो नी द्वाजो विपर पश्यति॥ २॥ द्वा सु उवाच॥ शृणु नानमद्रा प्रा न वा नी च कं-  
 या यदं॥ कस्य रूपं भवेद् न सि रस्य न कस्य रूपिणी॥ ३॥ चंद्रा कौन्तेय कासे नैव न द्रो गुरु मद्रं॥  
 द्वा स मद्रं मा काशं कस्या द्या रेखु निष्ठति॥ पतं न द्वा काशं प्रा व नै मा नैत्रि विष्णोः॥ २३॥ अथाके-  
 दि तीक्ष्णं वेणा यवदिसं प्रभां ७ सोमदिने श्री रववायं शास्त्रं॥ २४॥ सतपुष्टिं मद्रं गद न त्व-  
 सं न रं भवं ति सप्त पा तात् कस्येव निमित्तं प्रभो॥ रोमकाचार्य उवाच॥ द्वा स पश्य तो॥ इति श्रीसि-  
 र्वाशा स्मृत्ये न जल कर्म रोजेष्ट रवस्य रं श्रीरोम पट्टे रो पंचप्रधानां गराय द्वा स पुत्रे श्री श्रीरो-  
 मकाचार्यो वदति॥ अथ रववायं शास्त्रं उवाच नैव प्रसिन्न रववायं सर्वं कथाया मित्र नीता नाग-  
 न चैर्मा नं च॥ श्रुत्वा रुतु रं गवत्सव द्वा प्रकाशं प्राकृतं कथं॥ द्वा ती कर्म रं गानी या त रोमका-  
 चाचार्यो वदति॥ शृणु पुत्र वदस्यासि न वागे कथाया यदं॥ ये नैव द्यादि ते सर्वं ज्ञेयं को स चरा च

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ एतत्सर्वं तवाग्रेषु कथं त्रैलोक्यदीपकं ॥ २ ॥ इति काव्योक्तौ  
 ब्रह्मसिद्धिस्तु प्रयुक्तं ॥ कर्मसंघं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मण्यपुरा ॥ येन विज्ञानमात्रेण ज्ञायते च प्रमुखा  
 प्रभुर्मा ॥ ३ ॥ इदं भानुरति कान्ता सौम्योत्पलकानना ॥ सपुसागरपर्यन्तामहविशिष्टा तन्मा ॥ ४ ॥  
 तत्काये विष्णुदेवकर्मरूपं च धारितं ॥ तमुदाध्वानि तायेन कर्मरूपे प्रतियुता ॥ तस्मिन् प्र  
 तिरिक्ता देवाग्रामाणि नगराणि च ॥ त्रैलोक्याद्यादि त्रयेन कर्मरूपं प्रतिष्ठितं ॥ ५ ॥ प्रमाणादि  
 सारं तस्य प्रमाणपुत्रप्रयत्नतः ॥ द्वाकोटि सरूपाणि योजनानि प्रमाणा तः ॥ ६ ॥ अर्धदं नकुदं  
 वज्रमुतामित्रयो दशः ॥ एवं कर्म ऊर्ध्वप्रमाणं ॥ कोटिस्थात्र संख्येन कोटिमेकं सुरवर्तमा ॥ ७ ॥  
 तेन यो रंतं तस्य कोटि कोटि प्रमाणं तः ॥ पादौ पुच्छप्रमाणं च संख्यौ कटिस्थिते न च ॥ एवं कर्म प्र  
 माणा ॥ तस्योपरि भवेदं कं प्रमाणं कथयाम्यहं ॥ अष्टाशीति सरूपाणि पूर्वगत रसांतरे ॥ योज  
 नानां भवेत्संख्या ऊर्ध्वकं तद्वत योजनं ॥ पुनः पञ्च सरूपाणि भेदे मुकुटमदितां ॥ १२ ॥ अष्टौ नूतन स  
 रूपाणि अष्टाध्वसु प्रयत्नतः ॥ चतुर्कोटौ तस्माकं देवदानवदुर्भ्रं ॥ १३ ॥ सुमेरु भवति शोभा  
 दृष्टा त्रुष्टा विष्णुमहेश्वराः ॥ नृपति तस्मिन् चतुर्कोटिणं हेमरूपप्रभा वतः ॥ १४ ॥ स्फुरिष्येदयं यो मेरुं  
 वेष्टितं सप्तपर्वतः सुवर्णपश्चिमादि जाकुर्वुदो नाम पर्वतः ॥ १५ ॥ विष्णु रुद्रतपो यश्च सप्तैतै कुलप  
 र्वता ॥ चतुर्विंशति कोटी च विस्तारः पर्वताष्टणु ॥ १६ ॥ पंचविंशति कोटीनां सुमेरुमेकदा तिष्ठति ॥  
 कर्मोत्तरगतो नीरचतस्त्रकोटियोजनः ॥ १७ ॥ तस्य मेखसंधो रस्येति एते मेककर्मपुत्रः ॥ अष्टिको टि

सहस्राणि प्रभाणं पीतमेव च॥ नीरेतरमिदं लेंवंपातः॥ लेंस्कंधकं वरं॥ ८॥ नम्यनीरां न रं दोरं प्रभा  
 धं जलं च तरो॥ अयाशां स्त्रिष्विदं दहं कोटि पचाशमेव च॥ यो न जामातिन लेंयो रं प्रसाधं प्रतिदुष्ट  
 मं॥ अरु पंच अमेघं च तिष्ठति तल्लुधरे॥ ११॥ अतः कस्मवरां देवैर्कूर्मोपविच संस्थितः॥ दशकोटि स  
 दस्त्राणि प्रमाणं तिष्ठते सदा॥ १२॥ एषि वीएवरुणेण द्वादितां देव दानवैः॥ सागरा योन तु यं नि  
 तलात्ते च व संदारा॥ १३॥ शोखना गफ र्णी दे पि दत्तं वाचमुच मेखला॥ वेष्टिता सर्व भूमिषु विसृष्टा  
 त यो जने॥ १४॥ निरा लेंका निराकारा नक्षत्र गगना तरो॥ अणु धूस्त्र प्रय तेन प्रमाणं कुर्यात्मा  
 हं॥ १५॥ अष्टिकोष्टि भवेत्संख्या ध्रुव नक्षत्रा निष्ठति॥ ध्रुवं मंडलं माकाशं अष्टीकोटि स्थितं न च॥ १६॥  
 मादमंडलं व देयं दशकोटि भ्रू योजयेत्॥ पंचाष्टीति सदस्त्राणि त्रीणि विस्फुप दानि च॥ १६॥ अर्धं  
 भ्रुती भवेत्संख्या अष्टकोटि यो जने॥ सूर्यं स्वामंडलं व देयं प्रमाणं दशा यो जने॥ १७॥ एते विंशत्य  
 भाणं च सप्त पृष्ठा रण्य चक्रं॥ वसुं त्याका रतिः शोख स रेजो पाव नो द्वाता॥ १८॥ रवि मंडलं स माकाशे भा  
 म्यते विंश यो जने॥ सूर्य भस्म तं चंद्र मंडला॥ १९॥ चंद्रो प रि गतो भोमः दश सदस्त्र प्रमाण तः॥ सूर्यो  
 जने विंश रं भा म्यते भोम मंडला॥ २०॥ तुष्ट मंडलं माकाश प्रमाणं पंच यो जने॥ तुष्ट भस्म तं च  
 ए प्रमाणं अणु यत्न तः॥ २१॥ यो न नाना त्रयो लक्षैः सप्त सदस्त्र प्रमाण तः॥ उदकाक्षे गतो श्री घं भा  
 म्यते सूर्य मंडलं॥ २२॥ गुरु मंडलं माकाशो तिष्ठते सप्त यो जने॥ दश सदस्त्र गतो विंश यो पमि

छः

प्रतिपद

तु संस्थितः॥२४॥ ग्रोप विजने मुक्तं दशास दस प्रमाणतः॥ पंचयो न अक्षयं तु आकाशो धा निभं  
तः॥२५॥ प्राणिभूषा न रं व ह्ये च तु र्द्विप्रमाणतः॥ तस्योप विभवे द्वा रः प्रमाणं स एणु जकं  
ऊर्ध्वकोटि निभकारं का त रू पो म र्ता व त्तः॥ विप्रयो न न विस्मरो भा र्थे नि रू प्रकृतौ॥२७॥ नि  
राकाशे नि रा त्तवः के तो रा का श चा ॥ २८ ॥ चा दि एणः॥ रा स्ते प विज नः सो धि त्त ह्यो ज न भ्रा ज त  
न स्य के तोः भ वे सं रत्ना प्रमाणं विप्रयो न न॥ के तो प वि नि भ्रा त्तं व चा पु र्वं रु ति वे ज नः॥२९॥ भू  
काशो वायु का रे च त्वा पंचाश मे व च॥ वां पु र्वं रु ति वे जे न प्रु च दः श्रीं लु ग मि नः॥३०॥ अत्रो स्त्रे  
न ज न्ना मि नि वि का र नि रा म यो॥ नि रा न्ना व म नि भू न्य यो मा नी न प रा त्प रः॥३१॥ चा पु र्म न  
यु म द्वा स्यो वा द्वा क य पा ता स्य रू ॥ प्र य म नी र प च ा क्को दि न स्य च नी र नः॥३२॥ सु ते रु ति नि वि  
रत्ना तः श न यो ज न वि स रः॥ मी नं उ स य ते भी रः स वा को दि प्र यो ज नो॥३३॥ नी तो म रे स्थि  
नं कु र्मे यो ज न्ना नो श न त या॥ कु र्मे प वि र रू च द श स द स यो ज नः॥३४॥ कु र्मे प वि स्रु मे रू च  
अष्टा द्शी नि स द स र्ज कः॥ यो न न्ना नो भ वे स्त्रे पी ए ते र व प्र मा ण तः॥३५॥ उ त्प रे म क्त न स्रु स व त्त  
स्ते प्र यो ज नः॥ कु र्मे प वि स रू स्थि म द्वा य त्त ह्ये प्र मा ण तः॥३६॥ सो म तो द श स द स ता पि नो म्भ्रा  
काशे चा दि एणः॥ भौ मा द श स द स ता पि नु यु ध न द्वा ज मं ड त्तः॥३७॥ तु द्वा द श स द स ता पि नो म्भ्रा  
ग्रु रु स्थि तः॥ ग्रो र्द्वि प्र स द स ता पि नु क्त व क्त मं ड त्तो॥३८॥ प्रु क्तो द श स द स ता पि नो म्भ्रा  
चा दि एणः॥ धौ री तः यो न नं त्त ह्ये रा द्वा का श म ड त्तो॥३९॥ रा द्वा यो ज न त्त ह्ये व के तु रा द्वा म मं ड त्तो॥  
के तु प्र न न व त्त ह्ये तु पंच पंचाश मे व च॥४०॥ ए तं स म स व र्तो उ प्र मा णं॥४१॥४२॥४३॥४४॥



एतच्छ्रुत्वा ॥ १ ॥ अथ पूर्वदेशानि ॥ जी १ कान्तं कुर्वन् रक्तं तिग्मं रजोत्तमं गन्तुं शक्यं ॥ १ ॥ वसि  
ष्ठा ॥ यमनाथरपाट्टे अष्टवेदाः ॥ मा ॥ मन्त्राः ॥ कुर्वन् रक्तं १२ पंचाल १३ सूरसेन १४ जालि  
द १५ लोहितपुर १६ पुष्पिमसौदधस्थल १७ जालिम १८ शैवाल १९ कुकुमर २० लाट २१ अजाल  
२२ अर्जुन २३ मेदपाट्टमेरुदेश २४ कच्छ २५ मालेपुर २६ अवंती २७ पतिजान २८ वंजाल २९ ना  
मलिम ३० विमाल ३१ सकल ३२ शैवीय ३३ कोक ३४ उज्जयिनी ३५ गौरी ३६ कोका ३७  
नेपाल ३८ मक ३९ मुरक ४० नाजिक ४१ वाव ४२ खस ४३ कीर ४४ कालाशमी ४५ वहीर ४६  
माल ४७ लोहितपुर ४८ स्त्रीमात्र ४९ कामरूप ५० पौंड्र ५१ अथ दक्षिणपथाः ॥ मालाचल १  
मेरुल २ पोट ३ कोकाल ४ अर्जुन ५ अवंथाल ६ कच्छ ७ नागि ८ श्रीपती ९ विमर्ष १०  
११ लोमी १२ नापीन १३ अमीनदी १४ मुक्ति १५ जाला १६ नाग १७ नाग १८ नाग १९ नाग २०  
२१ नाग २२ नाग २३ नाग २४ नाग २५ नाग २६ नाग २७ नाग २८ नाग २९ नाग ३० नाग ३१  
३२ नाग ३३ नाग ३४ नाग ३५ नाग ३६ नाग ३७ नाग ३८ नाग ३९ नाग ४० नाग ४१ नाग ४२  
४३ नाग ४४ नाग ४५ नाग ४६ नाग ४७ नाग ४८ नाग ४९ नाग ५० नाग ५१ नाग ५२ नाग ५३  
५४ नाग ५५ नाग ५६ नाग ५७ नाग ५८ नाग ५९ नाग ६० नाग ६१ नाग ६२ नाग ६३ नाग ६४  
६५ नाग ६६ नाग ६७ नाग ६८ नाग ६९ नाग ७० नाग ७१ नाग ७२ नाग ७३ नाग ७४ नाग ७५  
७६ नाग ७७ नाग ७८ नाग ७९ नाग ८० नाग ८१ नाग ८२ नाग ८३ नाग ८४ नाग ८५ नाग ८६  
८७ नाग ८८ नाग ८९ नाग ९० नाग ९१ नाग ९२ नाग ९३ नाग ९४ नाग ९५ नाग ९६ नाग ९७  
९८ नाग ९९ नाग १०० नाग १०१ नाग १०२ नाग १०३ नाग १०४ नाग १०५ नाग १०६ नाग १०७  
१०८ नाग १०९ नाग ११० नाग १११ नाग ११२ नाग ११३ नाग ११४ नाग ११५ नाग ११६ नाग ११७  
११८ नाग ११९ नाग १२० नाग १२१ नाग १२२ नाग १२३ नाग १२४ नाग १२५ नाग १२६ नाग १२७  
१२८ नाग १२९ नाग १३० नाग १३१ नाग १३२ नाग १३३ नाग १३४ नाग १३५ नाग १३६ नाग १३७  
१३८ नाग १३९ नाग १४० नाग १४१ नाग १४२ नाग १४३ नाग १४४ नाग १४५ नाग १४६ नाग १४७  
१४८ नाग १४९ नाग १५० नाग १५१ नाग १५२ नाग १५३ नाग १५४ नाग १५५ नाग १५६ नाग १५७  
१५८ नाग १५९ नाग १६० नाग १६१ नाग १६२ नाग १६३ नाग १६४ नाग १६५ नाग १६६ नाग १६७  
१६८ नाग १६९ नाग १७० नाग १७१ नाग १७२ नाग १७३ नाग १७४ नाग १७५ नाग १७६ नाग १७७  
१७८ नाग १७९ नाग १८० नाग १८१ नाग १८२ नाग १८३ नाग १८४ नाग १८५ नाग १८६ नाग १८७  
१८८ नाग १८९ नाग १९० नाग १९१ नाग १९२ नाग १९३ नाग १९४ नाग १९५ नाग १९६ नाग १९७  
१९८ नाग १९९ नाग २०० नाग २०१ नाग २०२ नाग २०३ नाग २०४ नाग २०५ नाग २०६ नाग २०७  
२०८ नाग २०९ नाग २१० नाग २११ नाग २१२ नाग २१३ नाग २१४ नाग २१५ नाग २१६ नाग २१७  
२१८ नाग २१९ नाग २२० नाग २२१ नाग २२२ नाग २२३ नाग २२४ नाग २२५ नाग २२६ नाग २२७  
२२८ नाग २२९ नाग २३० नाग २३१ नाग २३२ नाग २३३ नाग २३४ नाग २३५ नाग २३६ नाग २३७  
२३८ नाग २३९ नाग २४० नाग २४१ नाग २४२ नाग २४३ नाग २४४ नाग २४५ नाग २४६ नाग २४७  
२४८ नाग २४९ नाग २५० नाग २५१ नाग २५२ नाग २५३ नाग २५४ नाग २५५ नाग २५६ नाग २५७  
२५८ नाग २५९ नाग २६० नाग २६१ नाग २६२ नाग २६३ नाग २६४ नाग २६५ नाग २६६ नाग २६७  
२६८ नाग २६९ नाग २७० नाग २७१ नाग २७२ नाग २७३ नाग २७४ नाग २७५ नाग २७६ नाग २७७  
२७८ नाग २७९ नाग २८० नाग २८१ नाग २८२ नाग २८३ नाग २८४ नाग २८५ नाग २८६ नाग २८७  
२८८ नाग २८९ नाग २९० नाग २९१ नाग २९२ नाग २९३ नाग २९४ नाग २९५ नाग २९६ नाग २९७  
२९८ नाग २९९ नाग ३०० नाग ३०१ नाग ३०२ नाग ३०३ नाग ३०४ नाग ३०५ नाग ३०६ नाग ३०७  
३०८ नाग ३०९ नाग ३१० नाग ३११ नाग ३१२ नाग ३१३ नाग ३१४ नाग ३१५ नाग ३१६ नाग ३१७  
३१८ नाग ३१९ नाग ३२० नाग ३२१ नाग ३२२ नाग ३२३ नाग ३२४ नाग ३२५ नाग ३२६ नाग ३२७  
३२८ नाग ३२९ नाग ३३० नाग ३३१ नाग ३३२ नाग ३३३ नाग ३३४ नाग ३३५ नाग ३३६ नाग ३३७  
३३८ नाग ३३९ नाग ३४० नाग ३४१ नाग ३४२ नाग ३४३ नाग ३४४ नाग ३४५ नाग ३४६ नाग ३४७  
३४८ नाग ३४९ नाग ३५० नाग ३५१ नाग ३५२ नाग ३५३ नाग ३५४ नाग ३५५ नाग ३५६ नाग ३५७  
३५८ नाग ३५९ नाग ३६० नाग ३६१ नाग ३६२ नाग ३६३ नाग ३६४ नाग ३६५ नाग ३६६ नाग ३६७  
३६८ नाग ३६९ नाग ३७० नाग ३७१ नाग ३७२ नाग ३७३ नाग ३७४ नाग ३७५ नाग ३७६ नाग ३७७  
३७८ नाग ३७९ नाग ३८० नाग ३८१ नाग ३८२ नाग ३८३ नाग ३८४ नाग ३८५ नाग ३८६ नाग ३८७  
३८८ नाग ३८९ नाग ३९० नाग ३९१ नाग ३९२ नाग ३९३ नाग ३९४ नाग ३९५ नाग ३९६ नाग ३९७  
३९८ नाग ३९९ नाग ४०० नाग ४०१ नाग ४०२ नाग ४०३ नाग ४०४ नाग ४०५ नाग ४०६ नाग ४०७  
४०८ नाग ४०९ नाग ४१० नाग ४११ नाग ४१२ नाग ४१३ नाग ४१४ नाग ४१५ नाग ४१६ नाग ४१७  
४१८ नाग ४१९ नाग ४२० नाग ४२१ नाग ४२२ नाग ४२३ नाग ४२४ नाग ४२५ नाग ४२६ नाग ४२७  
४२८ नाग





जदं प्रवर्त्तने॥ मर्गवक्रप्रतीकारं उदयास्तमनंचयनमभिशिभक्तपतंचैव च॥ इभुक्तिस्तथैव च॥ ए  
 नेकांचैव संयोगं स्वस्थावस्थावर्त्तनकं॥ २॥ यथैव भवतौ भवतस्तच्चुत्तापित्वं च॥ इति श्रीभक्तवैराग्य  
 योगसमस्तष्टष्टीविभागाः॥ ६५॥ संप्रत्येतो मया चार्थविरहितं॥ प्रथममभेदविभागे देशप्रमाणं  
 उदयादौ वीणारमदा वीणारोटा ४ मस्तोमोटा ५ मस्तत ६ मस्तोत ७ मस्तव ८ मस्तमस्तुदे र्हिंदर्यमा ९  
 सिंदुनु ११ सिंदुसापा १२ विभागा १३ रालिदु १४ मनुषु १५ मयूरत्ता १६ मीकोत १७ वावरोर  
 १८ समस्तलंक १९ सिंदुत्तपीप २० मंगार २१ मनुजो २२ मस्तवती २३ नर्मदा २४ मोदावरी २५ वेदरा  
 २६ वज्रदुण २७ किमानु २८ नलमिस्मारे २९ कुकुण ३० पूर्वदिशा ३१ गोड ३२ कोन्वकु ३३ शर  
 नाटावर्द्ध ३४ एवंशभेप्रारविभागे दिनप्रमाणं दिनमृष्टिका ॥ ३४॥ वरुस्वतिरविविभागे देश  
 प्रमाणं॥ सिंदु १ मस्तार २ वल ३ स्वसिरोय ४ मासदा ५ मस्तरेण ६ दुफन ७ ममदीण ८ मेवेदे गो  
 दंतक ९ मिरिह १० मिसर ११ रुस्वसोर १२ पराकु १३ कोतो १४ नमालिनु १५ किमने १७ राकर  
 १८ सोवीर १९ वीकउर २० उत्तरपथि २१ चर्नदर २२ दिमावल २३ लोदपुर २४ मीदना २५ वीर २६  
 काप्रसीम २७ वस २८ नल्लदर २९ मस्तमेन ३० मस्तकु ३१ रालिदु ३२ एवंशभेप्रारवि विव  
 द्यादिमृष्टी ३४॥ मंगल्लदविभागे देशप्रमाणं॥ माल्लवदपा १ मुगल्लस्थान २ कुलीप्रार ३  
 यामित्तु ४ पादल्लचसु ५ मस्तगोण ६ किमीमणु ७ नीदर ८ माल्लवदे वसो ९ वमरी १० वीमज ११ मस्त  
 मज १२ केसु १३ माल्लदु १४ माल्लविक १५ वस १६ वोरनु १७ चामिबके १८ मंगउर १९ वुव २० माल्लम २१



तुरकस्थान १ तगर १ भुज ३ द रासकात्मी समुद्र ४ द जदीय पण ५ सूना द सू दण ७ सुषाभा  
 वायभुजा ८ वेगाल ९ लक्ष्मणवती १० पूर्व देश मल ११ गेवेन द प्रमाणे दि नवटी ४० राद्वि  
 भाग द प्राः॥ ववरी १२ समस्त १३ वदिभीण र हेरव गोआसीर २ विमसीभाण ४ एवराद प्रभी  
 दिनेवटी २१ गेवेन ववरी मिग्रा ववरी म द वी क विता नि ॥ पुनरेव प्रव द्या मिश्रा थी नो देश  
 मंडल ॥ मेघरा विप्राः ॥ माव १ वल्लद २ केरा व ३ मीण देश ४ वज्रा म विदेशः ॥ ध्रा द  
 रा १ ववाद्र २ तनु र ३ मिथुन म विदेशः ॥ ध्राणी क १ ईमाद न २ कि मीभाण ३ गो म सी  
 ४ ५ कर्क म वि ले नि देशः ॥ मवेना द ६ सीध म १ मदेरा २ दे व ल ३ सिंदरा वि ल नि  
 देशः ॥ तुरक स्थान १ ध्रा ज २ मानु ३ सो पा ४ मुद्रा मु ५ मी ध्राण ६ मा मवेरा प्रा ७  
 दे लि म्ब ८ रू म ९ निर नि मि १० क न्या म वि ल नि देशः ॥ ध्रा द ली नु १ कु र २ न्म ३ द र सो  
 रा ४ द ल व ५ के कि एी द माण ७ विभा ग ८ प म म्ब ९ म स नाण १० विभा ग्नु ॥ तु ल म वि ल नि मि  
 देशः ॥ रो म प द्म १ ध्रा ना वी २ दे गाल ३ व ल व ने ४ विर माण ५ वा मा व रु द् का प्र सी २ ७  
 व वि क रा मि ल नि मि देशः ॥ रा ना १ ना म्ब २ ची दी ३ ध्रा म व ४ व चा दु ५ प वि ३ ६ द  
 ध्रा मि लि ७ व न रु व दि ८ द न म वि देशः ॥ द्गा रा १ सि पा द २ व म दा द ३ म्ब व सो ४



श्री ११८  
श्री ११९  
श्री १२०

[illegible]

दे प्राप्ते सिंदु दे शो प्रभं भवेत् ॥ इत्युक्तं मवीसी पत्नं ॥ अति जलं दृश्यते लोके लाभं चैव गते ॥ मे दुंच व र्धनेन  
 ज प्रचंडं विष्णु चंद्रो ॥ १ ॥ सर्वं द्याभ्यस्य सुभिक्षं योगो नामाशानो भवेत् ॥ मरुदे शो भवेत्सी ॥ प्रसर्व स्थाने छवि  
 गते ॥ २ ॥ अमुं सै रव्या प्रदुभा लोकां सीमा जं च विन प्रथति ॥ ज्वा ल्म च प्रवत्ना प्राक्तव आ गये ॥ वै मरि के ॥ ३ ॥  
 निक्षिपे मनुष्या क हं उदया भस म नंच या त ॥ वि जये व स दे प्रा प्रव र्धने ॥ स र्वा वि गत ॥ ४ ॥ मरि स म्पु ष्ट र सं प्रा  
 द द व द्या दि न वि न प्रथति ॥ सिंदु दे शो च द भि र्दं दं द्या प्रथ ति मनुष्याः ॥ ५ ॥ पु नः स र्व ज पी दुं गे व ग वि  
 ज प्र प्र जा य ने ॥ अ द्दि रे गी शि रे व र्मि नो यं च प्र चु र्भवेत् ॥ ६ ॥ उ न र पा य ये च ये के पि रु वि ताः नं रि ताः प्र  
 जाः ॥ प्रा ची प मि म योः स र्व प र च के वि सं स्थि तः ॥ ७ ॥ पी डि ता च प्र ज्ञा म वी ख दे स व स री गे ॥ स्व र म्प स र्व भ  
 वे त्यु जं व ग दि रे ग वि व र्जिताः ॥ ८ ॥ च द द्याभ्य स मा यु क्ताः नं दे तु नं दि ताः प्र ज्ञाः किं चि द्दि प ज्ञे व र क  
 वा ने प्र व र्धने ॥ ९ ॥ अ त्यु तो पा स्त म्प मे व ग व र्धने वं ड मं द ले ॥ सिंदु दे शो भवे द्दं गः पु स कं च न ये व च ॥ १० ॥ न प्र यं नि  
 स र्व स र्था नि वि न ह्ये न ज सं प्रा यः ॥ मे दं नं दे शो म ला क हं द भि र्दं वि गतं न या ॥ ११ ॥ पा र वं ड मं ज यो मा सि न्ध ख द  
 वै द र्श न जे व च ॥ अ द्या द या न वे दु र्ध पी डि ता ज य व स र् ॥ १२ ॥ पूर्व दे रा वि न प्र यं नि प र च के नि ष ति ताः ॥ अ  
 दि रो ग स मा यु क्ता स द ज व र स म वि ताः ॥ १३ ॥ रा नु नं वं द मा पू र्ति अ न्ये च प्र ग द्यो ते ॥ अ नि र्भु तं उ ग स  
 र्ध म्प ये व र स र ग मे ॥ १४ ॥ पु र च कु ग म चै व सिंदु दे शो च वि गत ॥ पी ष्ट ने स र्व स र्था नि प्र ज्ञा स र्वा प्र त्नी  
 य ते ॥ १५ ॥ मा नु र्वा नि र्द या लो के व ग च न च्छा नि स प्रा यः ॥ अ यो द्या नु स र पं थाः स र्व नं द ग रे ग रे ॥ १६ ॥ ए ते च्छे द  
 थ ने ते जे वे अ ति शी लं प्र व र्धने ॥ रा ज द र व च द भि र्दं ॥ ला नि भ रं गु र्ग म ॥ १७ ॥ अ र्थि भ व ति स मा न्यः स द  
 जे ग प्र व र्धने ॥ ने त्रे रा गी ती सा र म्प द भि र्दं प रि च कं ता ॥ वि ध न स्या त ग स र्व वि वि द्या प द व स यु त ॥ वि को र





सिंघुदेवोमलपुद्गलं यं गच्छंति मानकाः ॥ सुरासोरेमलापुद्गलं जिकण्डं प्रवर्त्तयेत् ॥ ४७ ॥ अस्मिन्मन्त्रे मे  
 वे ज्येष्ठा कश्चिन्मन्त्रा नेन वर्धति ॥ मुखकोक्तं तु टव्यादिदुर्वत्तानां सिंघाया ॥ ४९ ॥ अग्रे च मेवे  
 ज्येष्ठे सर्वोपद्रववर्जिताः ॥ मन्त्रेदेवैव दुर्भिक्षं स्वकारेण संशयाः ॥ ४९ ॥ अतएव हि भवेज्येष्ठे जयनां  
 पिसंख्ययोः ॥ परस्परं च भूयात्पुद्गलं निरुद्धि रं भुवि ॥ ४९ ॥ अतएव प्रादुर्भवत्तदं शिवमानयोः  
 दुर्भिक्षं उद्धृत्वा सोकापाकौ भूयते स्वरा ॥ ४९ ॥ भिदिनीपुष्पानेमकीमर्षस्वच्छिन्नप्रयति ॥ पापप्रभु  
 नोयाति संग्राभं गतपुत्रयोः ॥ ४९ ॥ रक्तोद्भवसर्वेद्योस्तेषां वा दुर्भितानां भवेत् ॥ सर्वेष्टिपुत्रं तानां  
 कासायुद्रस्वविनयति ॥ ४९ ॥ राजमरणां च दुर्भिक्षं विविधोपद्रवखंडं तानां ॥ स्वर्गमर्षमप्युपात्तं  
 पुद्गलं भवति निष्प्रितं ॥ ४९ ॥ विवक्तरे शैरवरोक्तं कोट्यनेकोट्यसंयुतं ॥ स्वर्गमर्षमप्युपात्तं  
 र्धज्ञं भवेत् ॥ ४९ ॥ पर्वतामेदिनीभोगं सर्वद्विजयते ॥ राजभोगं सर्वदुर्भिक्षं मर्षमर्षमप्युपात्तं ॥ ४९  
 सेभोर्ध्वत्वा उद्धृत्वा त्वं केकाणं नया ॥ दुर्भिक्षं जयते शिरं भयं जगद्विष्णोः ॥ ४९ ॥ जगमनेव स  
 रेप्रोसे यजोगोत्राभुभाभवेत् ॥ विषमस्य जगत्सर्वं वाकुत्ससत्तमवर्त्तयेत् ॥ ४९ ॥ राजभोगं सर्वदु  
 र्भिक्षं मर्षमप्युपात्तं ॥ रणानां भग्ननामं धीः कोट्यकोट्यपरायणाः ॥ ४९ ॥ दीपकचमरुर्धाणि स्पर्शव्या  
 न्यमरुर्धता ॥ कुक्करो च कर्कशे जे मर्षमप्युपात्तं ॥ ४९ ॥ पश्चिमवर्तिनां चैव दुर्भिक्षं तादृशं  
 विष्णोः शिवसंभवे किंचित्पुष्पानि मन्त्रा ॥ ४९ ॥ राजानो राजपुत्राश्च समानाश्च सर्ववत् ॥ संग्रामे  
 विनिवर्त्तयेत् पीडितास्तो कसे स्थितं ॥ ४९ ॥ रणानां भग्ननामं धीः कोट्यकोट्यपरायणाः ॥ ४९ ॥



ज्ञानः ॥ ७३ ॥ ननु सं प्रवक्ष्यामि यत्तु प्रवृत्ततः ॥ येन बुद्धि विपाकेन ज्ञायं कुर्वन्ति स्वेव भः ॥ १ ॥ ७४ ॥ रुचं केषु  
 ज्ञानं ज्ञे तौ केषु स च भवति ॥ ७५ ॥ येषु सैव फलं सर्वं प्रसाद्युक्तं निरवेव भः ॥ २ ॥ ७६ ॥ निरववायणे च विष्णुः ॥ ३ ॥  
 विमेषाग्रः सिद्धि मिष्टमेव नु त्ते नः ॥ ७७ ॥ परस्परं मदीया ज्ञाद्युक्तं कर्तुं निदिशतां ॥ ७८ ॥ कर्तुं चंद्रं तु त्तिष्ठानैव सति न क  
 त्यामते भर्गवः ॥ ७९ ॥ सिद्धे देवपुत्रा ज्ञानिष्ठो उद्यम्य भोजो गतः ॥ ८० ॥ राहुं च शक्रं धुनि ज्ञो गुरुं च कुजं धौमि  
 मिष्टु ज्ञे मीनं संगतः ॥ ८१ ॥ मकरं जीव रवि चंद्रं जयं च तिवरं धरा ॥ ८२ ॥ गुरुं देवा त्वेन्द्रो गणं वनवासां च सिंहं तं ॥  
 स्येन भूच न शास्त्रं को अस्मिन् यणे विन स्यति ॥ ८३ ॥ भेदे जीव द्वा मा पुत्रः मकरं धौमि च नृपे ॥ ८४ ॥ भग्नं सर्वं भवतीति  
 जयं चंद्रं प्रवर्त्तते ॥ ८५ ॥ न तो च श्रुतं कदा नु कीयि गुरु भौमि स मन्विता ॥ ८६ ॥ उदयारतं भवेवापि धाकं त्ते स च राव  
 ना चंद्रं ॥ ८७ ॥ एषु यो गेष्ट विरचयते मकरं सो च वक्तुं ॥ ८८ ॥ सेधं च यमुना रावो विन श्रयं निमग्नः पाथः ॥ ८९ ॥ धुनेषु  
 कृत्वा मा पुत्रः कुं भोजो मिमिषा वरः ॥ ९० ॥ राज पुत्र स्य वै युद्धं भयं सर्वं वसुंधरा ॥ ९१ ॥ मरुति कापं गमूत्स स्य नं वत्स  
 कं कुं पुं कोषा त्ते ॥ ९२ ॥ प्रसिद्धं नृपे विन श्रयं पाता त्ते प्रमरा पुं ॥ ९३ ॥ मकरं जीव सिनो भौमिः नारु स जेव व  
 नीने ॥ ९४ ॥ पदचक्रं च कुं त्ता स का ज्ञायं या निव स धरा ॥ ९५ ॥ सो राहुं सिद्धि देयं च पश्चिमं उदया च त्ते ॥ ९६ ॥ विन श्रयं नि  
 न सं देहं दे प्रो नै तं ग मेव च ॥ ९७ ॥ च ये स र्यं मुजे भो मारु क न्या च भर्गवः ॥ ९८ ॥ वसुंधरा विग्रहं सर्वं शुभ विग्रह  
 मेव च ॥ ९९ ॥ स मरु कं द हूयो भाम मे द पा द क द्दिशं ॥ १०० ॥ अस्मिन् यो गे वि न श्रयं ति सिद्धु भोजा वि श्रो व नः ॥ १०१ ॥  
 राहुं कुं भव ने प्रो नो मे यो भे यो भे म प्रा जे प्पारः ॥ १०२ ॥ सिद्धि नं युद्धं स ग्रा सं शुभि ज्ञा सं च व नीने ॥ १०३ ॥ को प्रसीदे च क ति  
 गे च य मुना या पंच गो द के ॥ १०४ ॥ एषु दे शे भव ती डा ह्यं य ग कृति मानवा ॥ १०५ ॥ राहु जीव सिन भूधरः च यो च श्र  
 कं सं युते ॥ १०६ ॥ प्रजा पीडा मरु राहु युद्धं निरं राहा प्रवर्त्तते ॥ १०७ ॥ पांशा त्ता म्बे व सो म राहा स्मिन् राहु ज्ञे तथैव च ॥  
 दो ए द शो समा र द्धानं दृ मिद्धं दारुणं भवेत् ॥ १०८ ॥ अग्नि भस्ते जगत्सर्वं क्रैशं च वि ति द्वा भवेत् ॥ १०९ ॥ मारु कं च



[illegible]

शर्वलोकानां विग्रहं कुरुते सदा ॥ मिथुनस्यो मदीयुजः सूर्यपुत्रेण संपुनः ॥ कुंभे विदमं ग्रीव विग्रहं  
 सौख्यं भवेत् ॥ कामाख्या मंगलं सिद्ध विदं जनेदं नया ॥ कीमा सर्वमनरापुं विनश्वर निभं  
 दायः ॥ १५ ॥ सिंहेश्वर विभं मे मेघमद्ये दह स्यति ॥ कन्या विवधुदशरुः विग्रहं सचराचरं ॥  
 सिंहेश्वरेश्वरा मंगलं मालवंचरिमाचरं ॥ पुदिशं गंग विदं भूतवदी विनश्वर निभं ॥ कुंभे कर्क  
 र मीने च गुरु मोग मघाने मघा ॥ पुदं भवति सो दंच प्रजापीडा च दभरणा ॥ शूद्रनीववद सूर्ये क  
 राणां प्रवर्त्तने ॥ विग्रहं प्रथमं युद्धं समग्रं च मला नभवेत् ॥ २२ ॥ तुलायादं वे संजीवकुंभमिष्टं  
 धा नैष्ठिकः ॥ विग्रहं सर्वं लोकां वत्सवं त्वं पूवर्त्तने ॥ २३ ॥ मेघस्थो च गुरु लोको लो नृत्तं विग्रहं  
 युतः ॥ सिंहेश्वरं दिक्के य मयुद्धं भवति दारुणं ॥ २४ ॥ सोमपुत्र सिद्धं जालं उदभरणं उभयप  
 द्यं ॥ प्रसिद्धं गे विनश्वरं निस्त्रीरा जं मघा पुदं ॥ २५ ॥ तुल्ये भोगे गुरु रक्तः ॥ मुक्तशो विनामचिना ॥ क  
 र्कभा उर्मिपीडा प्रजातां जं मघा दिशेत् ॥ २६ ॥ नीव मुक्त शनिमं दारुणं कलाशो प्रवर्त्तने ॥ विग्रहं सर्व  
 देशेषु स्वचक्रेण विनश्वर नि ॥ २७ ॥ शूद्रलोभका मिमर्षं चारुदशां प्रमत्तने ॥ मज्जने सर्वं देशां प्र  
 युद्धं भवति दारुणं ॥ २८ ॥ भोगेशो विनामचि मुक्तं विना दह स्यति ॥ एवमशो मलाभं गं दयका लं व  
 रुदभरणा ॥ २९ ॥ गंगा दारुणं सिद्धं सर्वं सुखं भवेत् ॥ न्नादं दया भुगमोणं सर्वमे नर्दिष्टं नि ॥ ३०  
 गुरु भोगेशो निभे म एकराणां प्रवर्त्तने ॥ मला पुद्धं मला पीडा विग्रहं सर्वं भवेत् ॥ ३१ ॥ गुरु मुक्त  
 धा निभे म एकराणां विनामचि ॥ प्रजा मदीया न सर्वा मला गेण स्य कर्त्तुमः ॥ ३२ ॥ रविमार्गं  
 मुक्तं रावो न संशयः ॥ परचने मदीया लो युद्धं भवति निश्रिणै ॥ ३३ ॥ भोगेशो विवधुदशमं नृणां शो म

[illegible]



[illegible]

इति श्रीरवचापणे गरुडकंठस्थिते ॥ रात्रिगोचरं रोमकोचांर्धवदति ॥ यदाभैषमद्वे गुरुभौमकर्कम  
 द्वागुरुत्तमद्वे रविनष्टाचंद्रोरेवेमहैविनश्यति ॥ सहेतुगुरुकतविनश्यति वासित्पाटुनष्टा  
 यमकुंक्षमहविनश्यति ॥ नष्टापाशमयदेशोद्यापाशमेववर्षति ॥ समरकंदषापरादिनश्यति सिं  
 द्वाद्वैतुर्कादिनश्यति ॥ काशमीरकुकात्तादिनश्यति ॥ १॥ यदाकुंभमद्वे गुरुभौमद्वे सप्तम  
 द्वागोक्षमेष्वरसिंरुमद्वे राहुनष्टासकंत्तनीएदेशाद्यापरादिनश्यति ॥ रात्राहिसपीडाउपद्रवानम  
 रद्विक्कंदरमात्रातुर्कादिनश्यति द्वाविदेशमेवदयाहणमेववरसंविग्रहरुद्विष्टादेशाभाजं  
 दोरादिनश्यति ॥ २॥ यदाभीममद्वे राभैष्वरमिष्टानमद्वे गुरुभौमकन्यामद्वे शुक्रमाद्वे सिं  
 रुमद्वे ग्राहिस्यनदासमस्तपुमसाएउद्रसंभविष्यति ॥ एमउकुदेशाद्यापदेर्ह्योते सिंदुदेशवि  
 ग्रहंस्वजेकविनश्यति ॥ ३॥ यदावद्यमद्वे गुरुभौमेष्वरभौमसिंदुमद्वे वैक्राहिस्यमकरमद्वे रा  
 हुनदासिंदुद्यापदेर्ह्योते ॥ मकरार्धापदेर्ह्युनश्यति वादारुसावानवानवाजांटेभ्यरभ्यंगोड  
 देशेष्वन्यविग्रहादिनश्यति ॥ ४॥ यदाभिष्टुममद्वे राभैष्वरमेवमद्वे ग्राहिस्यपुत्रमीनमद्वे मे  
 यत्तद्विष्टुममद्वे राहुभैष्वरभौमद्वे राहुनश्यति ॥ ५॥ यदाकुंभमद्वे राहुमेवमद्वे ग्राहिस्यकुंभमं गुरुनदाहु  
 पदेर्ह्योते कुंभकोभद्वे विनश्यति ॥ ६॥ यदाहुनमद्वे राहुमेवमद्वे ग्राहिस्यकुंभमं गुरुनदाहु  
 मसाहैष्वरभौमद्वे सिंदुस्थानंदोरादिनश्यति सिंदुत्तमद्वे परचक्रागामंभविष्यति सिंक्षेमं  
 द्वाष्टुद्यानेसर्वरूपमिपेति पटसि परभीकुंभारुविनश्यति ॥ ६॥ कुंभमद्वे यदाशानि गुरुवर्षे



नोभक्त

दूष

कदिनप्रवृत्तिः॥प्रतिभीष्टायापदेभ्यःप्राप्तं विनश्यति॥प्रोक्षेयापरदेष्टेभ्यःप्रविशंस्त्रात्मन्येविनश्यतिवेत्स्मात्  
 त्याग्यते॥इतिरवगायणेरात्रिगोचरकथितं॥पुनःश्रूयतां॥शोभकाचार्योवदति॥ग्रहशुद्धकृत्॥७७॥  
 नित्यपरचक्रैवदुर्भिक्षंवापिद्वारुणं॥सर्वभूयकयोर्ज्योतिर्वाप्यप्राप्तंनस्तु॥१॥पितृपुत्रभवेष्टादं कल  
 रं च गच्छेत्॥मानापुत्रेभ्यःन्येनेवंदुष्टाप्रशुभ्रंनया॥२॥श्रीगर्भान्नगृह्णतिशिवानपूवर्त्तते॥अथ  
 विभवेभ्यःप्राप्तंनस्तु॥३॥कथितेभ्यःसामं च मर्कटाप्रवर्त्तते॥विषयीतेभ्यःचिदं दृष्ट्वा  
 कारं प्रवर्त्तते॥४॥स्थानेस्थानेभ्यःदुष्टं नष्टं निर्गच्छं गमाः॥अतिशोभनेत्येषीदुर्भिक्षं भवति दारुणं॥५॥  
 संज्ञस्थानं मनुष्यादृष्टं कुर्वन्नेव नश्यति॥गर्वं भूयैकं विनश्यत् भवति दारुणं॥६॥भीमकाचार्यो  
 वदति॥सिंदुजन्म कथयति॥इति श्री पूर्व सेवसरय परमवद्वेष्टावर्धनमुक्तं॥भीमकाचार्यो वदति॥  
 पिसवावात्सराज्य शुक्लनाभ संवत्सरे भाद्रपदि मासे शुक्ल १२ शुभं नक्षत्रं दशमि तिमासि  
 द्वात्रिंशे कुम्भस्थे चंद्रे कुम्भे स्थापनं वरुमाने सुखे दद्यात् दृष्टी रक्षयति ४ नक्षत्रं यो एवं शुभं वेत्ता यो दिवं द  
 श्विती प्रभृता सिंदुर्जीता सिंदुर्ज्योतिर्यत्नं वशात् सिंदुर्जीता प्रदद्यान्नायेन रुक्तासत्त्वात् शुक्लपास  
 द्यमां एषा द्यमा एव त्यागवशात् सिंदुर्जीतः॥आष्टुर्द्वया॥१६००॥सास्यदिन २७ द्वाष्टी ४५ पल्लि २६  
 पञ्चा नक्षत्राभिको भवति सिंदुर्वाकारसिंदुर्भूत्स्मान्नामपाशुभिर्गुण्डं न मेरुदक्षिणापार्श्वे व पश्चिदेवा  
 म कुंकरं मरवेदी दक्षिणाकारं मलातेजोर्ध्वं नक्षत्रं वंभपुण्ड्रद्वयोर्भोगविग्रहं २ पादौ सिंदुर्वासाभं एष  
 विदुः स्यात्सामसिंदुर्जन्यत् ५००० प्रमाणं सिंदुः सामसं सवर्जं यदा वरुस्य निकर्कं स्थानं भवति सिंदुर्ग  
 रभीष्टं द्वातिराहुभोगवशात् वरुप्रमाणेन वदति दूषभूयता एवं देशाभ्युदये प्राथमं सिंदुर्कथितं॥पुनरेव

१२३	४	५	६
७	८	९	१०
११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८

प्रवक्ष्यामि श्रीमद्भोजननमस्काराणामः॥ अंगो दे प्रवृत्तसंवत्सरे द्वापुरे विशेषो र्वाभुत्त ८२५३ वे  
 प्राथमसे शुक्लपक्षे न नीचयानि यो गुरुकामरे रोहिणी नक्षत्रे चारये चंद्रे सूर्योदयात्को  
 लपत्ति ५६ मेघत्पने शुभवेत्तार्था मदीष्टमी पुत्रो जातः श्रयो नीसंभवः एष योगवशात् वृक्षप्रयत्नां॥  
 कोयं वर्ष २१०० मास ४ दिन १५ घटी २६ पक्ष २ श्रीद्विजन जीवति न्तवशात् वृक्षप्रयत्नां॥  
 देमकावो यो वदति॥ गुरुश्रीकषया म्द॥ यदि शो हि वरुस्थ नि भूमि सुताः विचरंति क्रमाक्रमेण गताः॥  
 धनं धान्यदि रण्यविनाशकरः स्वयं याति मदीय निर्वेश धरा॥१॥ यदा मेघ मद्ये गुरुश्री नदा वावुरदंश  
 उर्ध्ववायु मन्त्रं याति॥ अंगदुकात्ता द्वि नश्य नि फसे स्वनीण देशे भूयं भवति॥१॥ वृष मद्ये गुरुश्री नदा  
 रु मीयाण मकोटान विनश्यति॥२॥ सिंह मद्ये गुरुश्री नदा नुदक स्थानं विनश्यति॥३॥ कन्या मद्ये गुरु  
 रुश्री नदा अदस्ते प्रातु रका द्वि नश्यति॥४॥ वृश्चिक मद्ये गुरुश्री नदा कर्कट उद्भुजो भवति॥५॥ ध  
 न मद्ये गुरुश्री नदा साउण नृसि पे टपटसि॥६॥ मकर मद्ये गुरुश्री नदा सिधु समसं यापमा द्वि नश्यति  
 ७॥ कुंभ मद्ये गुरुश्री नदा परा भवा द्दी विनश्यति॥८॥ मीन मद्ये गुरुश्री नदा अदलु दुकात्ता द्वि नश्य  
 ति॥९॥ भीमश्री मी यदा गच्छेत्तदा रुकष या म्दं॥ मेघ मद्ये भो मश्री नदा कर्कट विनश्यति॥१०॥ वृष म  
 द्ये भो मश्री नदा क्रिया एण विनश्यति या परा ताः॥२॥ सिधु न मद्ये भो मश्री मेका नुमं लान वि नश्य  
 ति॥३॥ शक र्क मद्ये भो मश्री नदा वरुणा परा द्वि नश्यति॥४॥ सिंह मद्ये भो मश्री नदा अमी न विनश्यति  
 ५॥ कन्या मद्ये भो मश्री नदा कुरा जायी विनश्यति॥६॥ तुल मद्ये भो मश्री नदा अमी न विनश्यति  
 ७॥ कुंभ मद्ये भो मश्री नदा मरुता नृ विनश्यति॥८॥ धन मद्ये भो मश्री नदा काशमी रं विनश्य  
 ति॥९॥ मकर मद्ये भो मश्री नदा को न्ध कु व्र वि नश्यति॥१०॥ कुंभ मद्ये भो मश्री नदा सोमावृ

विनश्यति॥१॥ मीन्मद्ये भोमी नदा कदेवं विनश्यति॥१२॥ मेघमद्ये रविशोभी नदा पुनराग्रेण स  
मद्ये विनश्यति॥१३॥ वधमद्ये रविशोभी नदा समरकंदं विनश्यति॥१४॥ सिंधु नमद्ये रविशोभी नदा  
इदं शं विनश्यति॥१५॥ कर्क मद्ये रविशोभी नदा मुदेउलं विनश्यति॥१६॥ सिंह मद्ये रविशोभी नदा सुल्हा  
नं विनश्यति॥१७॥ कन्या मद्ये रविशोभी नदा उंगलं विनश्यति॥१८॥ तुल्य मद्ये रविशोभी नदा सिद्धि  
प्रतृकादि नश्यति॥१९॥ वृष्टि मद्ये रविशोभी नदा अग्रवं विनश्यति॥२०॥ धन मद्ये रविशोभी ना द  
देशं विनश्यति॥२१॥ सकर मद्ये रविशोभी नदा कुंकुणं विनश्यति॥२२॥ हुं मद्ये रविशोभी नदा मोमप  
त्रं विनश्यति॥२३॥ भीम मद्ये रविशोभी नदा महाद विनश्यति॥२४॥ भुक्त शोभी यदा गच्छेत्तर  
रुक्थपायं॥ मेघ मद्ये भुक्त शोभी नदा वातं विनश्यति॥२५॥ वध मद्ये भुक्त शोभी नदा वहेद विनश्य  
ति॥२६॥ सिंधु नमद्ये भुक्त शोभी नदा वा मनस्य स्त्री विनश्यति॥२७॥ कर्क मद्ये भुक्त शोभी नदा भूतवैद किम  
श्चति॥२८॥ सिंह मद्ये भुक्त शोभी नदा नीमां विनश्यति॥२९॥ कन्या मद्ये भुक्त शोभी नदा दुर्मजो विनश्य  
ति॥३०॥ तुल्य मद्ये भुक्त शोभी नदा संभ्रष्ट विनश्यति॥३१॥ कन्या मद्ये भुक्त शोभी नदा  
अग्नेऽ विनश्यति॥३२॥ धन मद्ये भुक्त शोभी नदा उंगम सि पाषाणि चरसि॥३३॥ सकर मद्ये भुक्त शोभी नदा  
समर कंदं विनश्यति॥३४॥ कुंभ मद्ये भुक्त शोभी नदा मञ्जवाटं विनश्यति॥३५॥ भीम मद्ये भुक्त शोभी नदा  
अग्रवं विनश्यति॥३६॥ वृद्ध शोभी यदा गच्छेत्तर रुक्थपायं॥ मेघ मद्ये वृद्ध शोभी नदा मेवाट विनश्य  
ति॥३७॥ वध मद्ये वृद्ध शोभी नदा गुणी एं विनश्यति॥३८॥ सिंधु नमद्ये वृद्ध शोभी नदा वाणि मि विनश्यति॥३९॥  
कर्क मद्ये वृद्ध शोभी नदा पुनरा तं विनश्यति॥४०॥ सिंह मद्ये वृद्ध शोभी दे का नि रि विनश्यति॥४१॥ कन्या



सिधायनि सिध नि॥ गुरुगनसना नाम रुद्रेष्टवसरसनी॥ १२॥ पूर्वभागे तथा रुद्रवेदिके मेरुमे  
 वच॥ मेमेवे विनप्रयति येवात्य कोणसिधना॥ १३॥ आरुण उजमे पूर्वा विष्टुप्रानि स्थिते॥  
 उदयाण पूर्वस्थानं वदन्तं कुप्रमकोष्ठात्मा॥ १४॥ नीलं चन्द्रकाशमीदं पंचनाथपिरमेवच॥ ऊर्ध्व  
 क एनि वसन्तये चान्ये येदपदका॥ १५॥ एतेरेण विनर्ष नि उत्तराङ्ग द्विधा मिता॥ मेव तीशुप्रि  
 नीय मंत्रिषु दर्शयानि स्थिते॥ १६॥ एवंप्रमाणं कूर्मस्य द्वाभ्यस्य सं प्रकीर्त्तितं॥ रतिरव वाय ए कूर्मस्य  
 जाकीर्त्तितं मुनिभिः पुरा॥ १७॥ एवंप्रमाणं कूर्मस्य द्वाभ्यस्य सं प्रकीर्त्तितं॥ रतिरव वाय ए कूर्मस्य  
 से प्रकाशायैव दत्तं निदु प्रभूयतां॥ १८॥ मंद च प्रवृत्ता सिध एतदुपपद्य ततः॥ विष्णो प्राप  
 सिधो पुर्वेण भद्रस्ती च मया द्रव्य॥ १९॥ पूर्वभाद्रपदा तेषु परिधः कश्चिदपि योः॥ उक्तुप्रानं चानि  
 दीतम् सिक्तेषु तेषु वच॥ २०॥ प्रचंड मारुत भूमेव प्रारुणं चंद्रसूर्ययोः॥ पंशुव्यष्टिदिशो दातुं विष्ट  
 त्रिवर्षं मंथयिदि॥ २१॥ तारकापतनं दुष्टाभ्यन्यस्मिन्निभिरुक्तुते॥ उग्रपतेयं तद्विज्ञानीयात्समञ्जसा  
 वंतिने॥ २२॥ राशुञ्जलप्रकाशिते गन्धुत्तयं नैवेष्टे॥ फलं तत्रैव वदन्मसिकारं प्रपुत्रक॥  
 २३॥ नेत्रेण मनीषादं भयादभ्यन्यस्य नुसृता॥ २४॥ त्वदीरघटागणे अभ्यसस्य तत्र मेदिनी॥ २५॥ सप्त  
 अष्टिर्मां रूर्वाणि अष्टपुष्पाफलद्वयोः॥ द्रुतघापीरुतास्तेका सेंदवाभिज्ञवपुना॥ २६॥ वर्धनात्  
 धरा भूमेव कोरासर्वेस्तिरापण॥ एतेरेण विनर्ष नि उत्तराङ्ग द्विधा मिता॥ मेव तीशुप्रि  
 स्मिन्ना तथा स्वाधिरगेवापुनर्वसु॥ उत्तरा फल्गुणी चैव अष्टि नीससप्ततया॥ २७॥ यद्यत्रैव स्थ  
 किंचित्कायं तत्र विनिर्मुक्तं भवेत्॥ तस्मिन् द्रष्टव्यं त्रिकोणात् तस्य वदन्नासि त्त्वद्वेष्टे॥ २८॥ मरुता



तस्मादात्मनि तन्मयप्रपञ्चितं॥ उन्मत्तानि तेषां भेदान्मुञ्चति जलं क्वचित्॥३॥ प्रकाशं हि प्रपञ्चं नैव  
 त्वयि॥ मेव च॥ वायुवेगानि भूतानि पतन्ति पृथग्गोचरे॥ देवा विप्रास्तथा मनुजश्च॥ अस्मादिदं यैवेव  
 नष्टं॥ अस्मान्वा भूतान्वा भूतैः प्रवेतसा॥५॥ पञ्चानामप्यसिनाम्न उज्जयन्यस्तेष्ववतरन्॥ पौडरा  
 चतस्राम्बुजा पूर्वव्याप्तं यैवेव॥ वेवती रुग्णैर्देवा उन्मत्तान् प्रपद्यन्त्या॥१॥ यद्यत्र त्वत्तत्किंचिद्वि  
 कांश्चाप्यभवेत्॥ अत्र दुर्दीरघाजागोचरदुःसंस्था च भेदनी॥ प्रपद्ये तत्र जायते बह्वृष्य फलदुःकाः  
 कीष्काभूयकाश्चैव सर्वे॥ भः प्रपदुर्बुधः॥ मत्स्यमभीरप्यश्चैव निर्वृत्तिस्तस्मिन् स्थिता॥५॥ नानि  
 वेगमप्यत्र सा स्यात्तेति खं निरीदकाः॥ दान्यानि च प्रदद्यात्ति वद्वा॥ अफलिता भवन्॥५॥ पृथु  
 न त्याञ्छिताश्चैव सर्वे दोषा विवर्जिताः॥ न्यायं कीदृशं सौभाग्यं सौभाग्यं च तेषैव तेषैव च॥७॥ हिन्दुनाम  
 सुराभ्यां विनश्यंति नमसा यः॥ नृत्तिममुदेषु यत्नेना विनश्यंति नमसा यः॥७॥ अथ मर्कटं मन्दम्॥  
 अथ एवमसौ भोजनमायादौ हि॥ सी॥ अति हिंसायां प्रपद्ये तन्मसा यः॥७॥ अथ मर्कटं मन्दम्॥  
 तस्य सर्वे दोषा विवर्जिताः॥ स हिं कुर्वन्निभजन्मः सुमिदं पृथिवी तजे॥२॥ समुद्रमागच्छाच्चैव मन्द  
 देशस्तथैव च॥ सर्वे सौख्यमवाप्नोति मुनिर्ज्ञेयसु संपदः॥३॥ नन्दे च तयो देशा तस्मिन्नुत्तमं ददति  
 यानां तेषां जगन्मता पीडयन्ति न कदापि॥४॥ उदरं यत्नेन कषमीदं भस्त्रवं कुर्वन् एतथा॥ स्नाद देशे  
 विराट् च समरकद विनश्यति॥५॥ विमसकं च प्राणायामाय यत्नं कर्तुं हि मासकं॥ मासमेकं च वारं  
 एषां मर्कटं देशसिक्॥६॥ इति मन्दस्ता नि॥ अथैव वाप एते कुञ्चिन्ते॥ इष्यथुका संपत्तेः॥ अथानं  
 संप्रवक्ष्यामि पृथुनां प्रपद्यन्तानः॥ उदरासौ मन्दपुत्रेण फलं तस्य प्रकीर्तितं॥१॥ देवगणान्न न

जेष्ठ॥ देवतीअस्मिन्नी पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा कृत्तिकारिहसर्गमेष्टु॥ शुक्रोक्तमनं करोति तदाधुरासापणे विनश्य  
 तिविग्रहंसारविग्रहं भरुशुद्धिस्वचक्रं विनश्यति॥ मानुषाणामेव जेष्ठु॥ रोहिणी श्रीणिपूर्वाणि उ  
 र्जयमेव॥ अश्लेषा भरणी श्रैष्ठ्यं वै तेमानवगणानः॥ १॥ तेष्टुशुक्रोक्तमनं करोति तदाशेषपननेष्टु  
 विग्रहं कुंकुटोचमयं त्वादपेष्टु सुसिद्धमप्यश्लेष उन्नतपथिदुर्मिहं प्राविष्टो विग्रहं भवति॥ राक्ष  
 सगणान्देष्टु॥ ८॥ निष्ठाकानि कोप्येष्टा मद्यामृतं विधायेष्टाः॥ चित्रा नानिष्ठा श्रेष्ठा नवै तेराक्षसाग  
 रानि॥ तेष्टुशुक्रोक्तमनं करोति तदा हिंदुस्थाने विग्रहं धापयैष्टु भवति॥ शिखरे न अविग्रहं सिद्धु देशा  
 मद्यमं ईस्यारुण आसं भूतं शो विग्रहं शोराष्टु दुर्मिहं शोपादे विग्रहं ओष्टु भवति॥ अष्टुदेव  
 गणान्देष्टु शुक्रोदये करोति॥ तदा जालं दारविग्रहं सिद्धु देशो कर्त्तुं॥ अश्लेषा भरणी सुसिद्धं  
 द्युष्टं हिंदुस्थाने द्युष्टं कर्त्तुं दुर्मिहं॥ मानुषाणामेव जेष्ठुशुक्रोदये करोति॥ तदा हिं गेष्टु मद्यो सोष्टि  
 विग्रहं शीराश्लेषा मद्यमं वेष्टाश्लेषा मद्यमं॥ क्रमेण अश्लेषा विग्रहं भवति॥ राक्षसमद्यं जेष्ठुशुक्रोदये करोति  
 तदाश्लेषा पुनरावितिग्रहं पुनरावितिग्रहं मद्यं विग्रहं भूतं कर्त्तुं॥ राक्षसमद्यं जेष्ठुशुक्रोदये करोति  
 फलं प्रणुष्टु अष्टुश्लेषा नः॥ २॥ देवगणान्देष्टुशुक्रोदये करोति॥ तदाश्लेषा नं दिद्विणे विग्रहं भू  
 तकष्टुश्लेषा विग्रहं भरु देशो विग्रहं नेपाथे विग्रहं भवति॥ राक्षसगणेषु ग्रहं उदय करोति॥ तदाश्लेषा  
 द्युष्टं जेष्ठुश्लेषा विग्रहं हिंदुस्थाने विग्रहं चीलादेशे अश्लेषा विग्रहं॥ इत्युदय ग्रहं देवगणान्देष्टुश्लेषा  
 मद्यमं करोति॥ तदा देवजनव विग्रहं राक्षसाश्लेषा मद्यं विग्रहं भरु देशो विग्रहं॥ दुर्मिहं देवो विग्रहं॥  
 मानुषाणामेव जेष्ठुश्लेषा मद्यमं करोति॥ तदा हिं द्युष्टि विग्रहं योचस्तेष्टुश्लेषा विग्रहं॥

रव

१७

रवि

काशीर विग्रहं॥ शत्रुसगणनक्षत्रेषु रुद्रसमन्तकरोति॥ तदा श्रीपर्वने विनाश विदेभी विग्रहं प्रभावश्च  
विग्रहं शुक्रमो विग्रहं कछु विग्रहं शिवमणिविग्रहं विद्याकर ए विग्रहं द्रुमुदय फलभुम्भे॥ शुभरी  
मकावाय विग्रहं॥ प्रणुप्रवदनामि गुराणं मुपलब्धम्॥ एकशशिपदा फलक पायानि विधेयम्  
१॥ प्रकीर्तितुष्टां प्रणु एकाशेषदा भवेत्॥ पदत्रक्राणं विद्या रक्षितु देव विधेयम्॥ २॥ एकशशि  
यदा फल गुरु भौम शोभितसाः॥ सोमश्रे भवेत्तु गोसिंदु देव विनश्यति॥ इति ग्रह मूलात्॥ शाके १८  
वरुद्रास पद गण विनश्यति शाके १५५ सिद्धी न सावा एवाय विनश्यति॥ शाके ११२ अरभी ए पद गं विन  
श्रयति शाके १२१ सिद्धका ह्य विनश्यति शाके ११५ देवमिष्ट विनश्यति शाके १२२ गुरुसतुम्  
का विनश्यति॥ शाके १२५ सुशसां साह्य विनश्यति शाके ८३२ वंभ ए वाडम किडा मय्य  
भवति शाके १२१ नक्षत्रं भूमि पेट पटसि शाके १३८ हिन्नी तुम्भे भूने शाके १२३६ टोम्भ  
न तुम्भे भूने शाके १२३६ काण्डे कोट तुम्भे भूने शाके १३३६ रुवभीर विनश्यति॥ शाके १४१  
रुम्भे विनश्यति॥ शाके १२२० सोमवं विनश्यति॥ शाके १२३६ सुशसां विनश्यति॥ शाके ११५२ वग  
दाद कापदे॥ विनश्यति॥ शाके ११२ सोम स्या न्तुम्भे भूने॥ शाके १२२ वंभ इति समुवेदि पटि॥ शाके  
१२८२ अरु अरु समुद्र पेट पटसि॥ शाके १३३२ तथा १४३ सिंदुसा ग्राह्य नो भवति॥ शाके १२४२॥  
समुद्र ग्राह्ये नो भवति॥ शाके १२८० वास न स्यात्सी वक्ष्यते प्रत्यये यति॥ शाके १२२५ मृज गति समु  
द्रा विनश्यति॥ शाके १२४४ मरुताड मरुता भवति॥ शाके १२०८ सिंदु सापदे भूने॥ शाके १२३० हिन्दु  
गजान्दे एग विनश्यति॥ शुक्रं सी ए नक्षत्रा ए पद ग्रा भवति॥ शाके १२४६ कुं कुं ए विनश्यति॥ शाके ॥





